नाग और गरुड़

महाभारत में आदि पर्व पर आधारित गरुड़ माता विनता
के
स्वतन्त्र करवाने की आदर्श कहानी

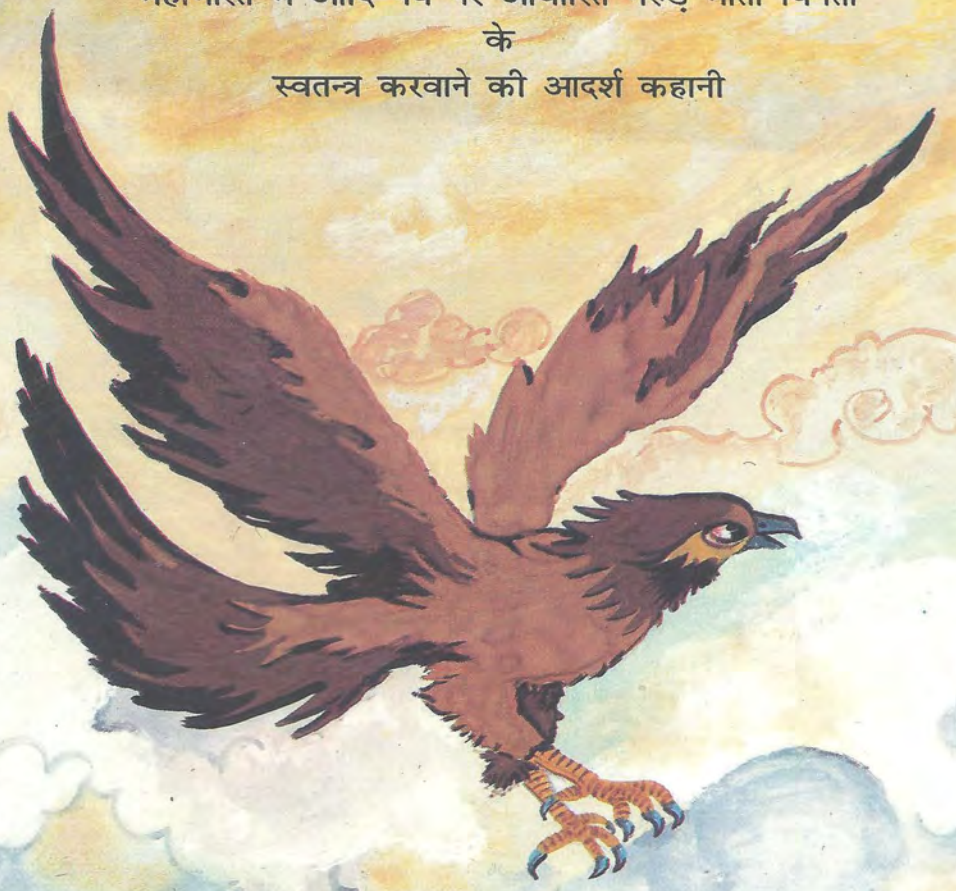

संतराम वत्स्य

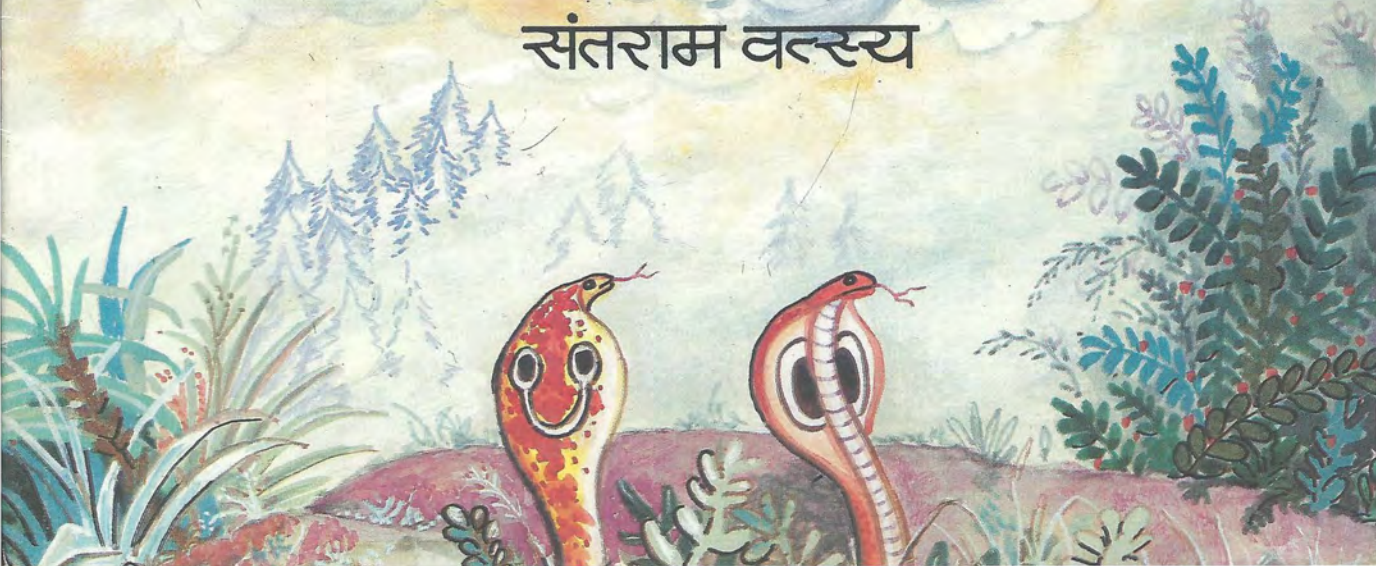

नाग और गरुड़

महाभारत में आदि पर्व पर आधारित गरुड़ माता विनता
के
स्वतन्त्र करवाने की आदर्श कहानी

सन्तराम वत्स्य

मूल्य : ~~25.00~~ रुपये 15

प्रकाशक : संस्कार प्रकाशन, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006 संस्करण : 1997

मुद्रक : राधा प्रेस
गांधी नगर, दिल्ली

NAAG AUR GARUR story *by* Pt. Santram Vatsya

नाग और गरुड़

उधर तेजपुंज गरुड़ जब आकाश में उड़े जा रहे थे, तो देवताओं ने समझा कि अग्निदेव हमारे ऊपर कुपित हो कर हमें जलाने जा रहे हैं। वे तुरन्त अग्नि की शरण में गये और उन्हें प्रणाम कर के बोले–"अग्निदेव! हम से क्या अपराध हुआ है जो आपका तेजपुंज हमारी ओर बढ़ा चला आ रहा है। आप हमें भस्म तो नहीं कर डालना चाहते ?

अग्निदेव ने उत्तर दिया–"देवताओ! आप को भ्रम हुआ है। आप जो समझ रहे हैं, यह बात नहीं है। ये महाबली गरुड़ हैं, जो मेरे ही समान तेजस्वी हैं। आप इन्हें अपना शत्रु न समझें। ये महर्षि कश्यप और विनता की सन्तान हैं। ये पक्षिराज नागों के लिए कालस्वरूप और देवताओं के कार्य-साधक हैं। ये दैत्यों और राक्षसों के परम शत्रु हैं। इन से डरने की आवश्यकता नहीं। चलिये, हम सब इन का दर्शन करें।

अग्निदेव को आगे कर के देवता गरुड़ के पास गये और उन की स्तुति करने लगे।

देवताओं की स्तुति से प्रसन्न हो कर गरुड़ ने अपने शरीर और तेज का संकोच कर लिया । वे देवताओं को अभयदान देते हुए अपने बड़े भाई वरुण के पास पहुंचे और उन को अपनी पीठ पर बिठाकर पिता के आश्रम से माता के घर की ओर चले गये जो कि सागर के उस पार था ।

इसी समय सूर्य भगवान् देवताओं पर कुपित हो गए और उन्होंने समस्त लोकों को अपने तेज-ताप से भस्म करने का निश्चय कर डाला ।

बात यह थी कि सागर-मन्थन के बाद जब मोहिनी रूप भगवान् विष्णु देवताओं को अमृतपान करा रहे थे, राक्षस राहु देवताओं में बैठा अमृत पीने लगा । सूर्य और चन्द्रमा ने उसे पहचान लिया और देवताओं को बता दिया । भगवान् विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से राहु का सिर काट डाला किन्तु अमृतपान के कारण वह अमर हो चुका था, इसलिए मरा नहीं । तब से उसने सूर्य और चन्द्रमा को ग्रसना प्रारंभ कर दिया। अन्य देवताओं ने उन की कोई सहायता नहीं की । सूर्य ने मन में सोचा– 'मैंने राहु का भेद देवताओं के हित के लिए ही तो प्रकट किया था, पर अब देवता उस के सन्ताप से मेरी रक्षा करने का कोई उपाय नहीं करते हैं । इसलिए मैं सम्पूर्ण लोकों को भस्मसात् कर दूंगा ।

देवताओं को जब इस बात का पता लगा तो तो उन्होंने ब्रह्मा को बताया । वे बोले– 'मुझे सब पता है । इस का उपाय मैंने पहले ही कर रखा है । महर्षि कश्यप के पुत्र वरुण को सूर्य का सारथी बना देने से सब ठीक हो जाएगा । वे उन के आगे बैठ कर उनके तेज को रोकेंगे भी और हरेंगे भी ।

देवताओं की प्रार्थना पर गरुड़ ने वरुण को सूर्य का सारथी बनने भेज दिया ।

गरुड़ अपनी माता विनता के पास जा पहुंचे। माता को दासी के रूप में सेवा करते देखकर गरुड़ का मन बहुत खिन्न हुआ।

एक दिन अपने पुत्र गरुड़ के पास बैठी हुई विनता को बुलाकर कद्रू ने कहा–विनते! सागर की कोख में एक निर्जन नाग-प्रदेश है। तू मुझे अपनी पीठ पर उठा कर वहां ले चल।

विनता ने आज्ञा का पालन किया और कद्रू को पीठ पर उठाकर ले चली। माता की आज्ञा से गरुड़ भी नागों को अपनी पीठ पर उठाकर उनके साथ चल पड़ा।

पक्षिराज गरुड़ आकाश में सूर्य के पास-पास उड़ने लगे जिस से पीठ पर बैठे नाग गर्मी से झुलस कर मूर्छित होने लगे।

कद्रू ने देखा कि उस के पुत्रों को सौत का बेटा जान-बूझकर मारने पर तुला हुआ है । उसने इस विपत्ति से बचने के लिए देवराज इन्द्र की स्तुति करनी प्रारम्भ कर दी । कद्रू इन्द्र से वर्षा बरसाने की प्रार्थना करने लगी जिस से नागों का ताप शान्त हो ।

देवराज इन्द्र ने कद्रू की प्रार्थना स्वीकार की और आकाश को मेघाछन्न कर दिया । थोड़ी ही देर में वर्षा भी होने लगी ।

झुलसते नागों को वर्षा से शान्ति मिली । कद्रू ने इन्द्र के प्रति आभार प्रकट किया । कुछ समय बाद वे सकुशल उस द्वीप में जा पहुंचे।

यह द्वीप विश्वकर्मा द्वारा निर्मित था। इस में भीमकाय मगरों का निवास था। जब नाग वहां प्रविष्ट हुए तो उन्होंने वहां लवणासुर को देखा। चारों ओर से समुद्र से घिरा हुआ यह द्वीप तट से टकराती लहरों से आर्द्र और रंग-बिरंगे झुंड के झुंड पक्षियों के कलरव से गुंजित था। इस द्वीप पर फूलों और फलों की भरमार थी। यह द्वीप लता-वृक्षों और कमल पुष्पों से सुशोभित सरोवरों से बड़ा मनोहारी लग रहा था। सुगन्धित वायु चमर डुलाता और पुष्प गिराकर पुष्पवृष्टि-सा करता प्रतीत होता था। नाग-मण्डली वहां बहुत प्रसन्न हुई।

कुछ समय पश्चात् नागों ने गरुड़ से कहा—"तुम आकाश में उड़ते समय धरती के सभी सुन्दर स्थानों को देखते रहते हो। अतः हमें किसी दूसरे ऐसे स्थान में ले चलो जहां निर्मल जल के सरोवर हों।"

गरुड़ चुप रहा थोड़ी देर बाद उस ने मां विनता से पूछा—"मां! क्या कारण है कि मुझे नागों की आज्ञा का चाकरों की तरह पालन करना पड़ता है ?"

विनता ने कहा—"बेटा, दुर्भाग्यवश मैं अपनी सौत की दासी हूं। इन नागों ने कद्रू के कहने से छल करके मुझे हराया है।"

यह सुनकर गरुड़ ने दुःखी होकर नागों से कहा—"नागो! मैं जानना चाहता हूं कि क्या करने से मेरी माता को तुम्हारी दासता से छुटकारा मिलेगा।"

गरुड़ की बात सुनकर नागों ने कहा—"यदि तुम हमें अमृत ला कर दे दोगे तो तुम्हारी माता का दास्यभाव समाप्त हो जाएगा।"

गरुड़ ने कहा—'ठीक है'। फिर वह माता से बोला—"मां ! मैं अमृत लेने के लिए जा रहा हूं किन्तु मेरे खाने-पीने की क्या व्यवस्था होगी, यह मैं जानना चाहता हूं।"

विनता ने कहा—"समुद्र के एक द्वीप में मांसभक्षी निषाद रहते हैं, उन्हें खा कर तुम अपनी भूख शान्त करो और अमृत ले आओ। पर ध्यान रखना, कहीं ब्रह्म-हत्या न कर बैठना। कैसी भी विकट परिस्थिति हो, ब्राह्मण से द्रोह मत करना।

यह समझाते हुए विनता ने पुत्र को यात्रा निर्विघ्न समाप्त करने और सफल मनोरथ हो कर लौटने का आशीर्वाद दिया ।

पक्षिराज सर्वप्रथम अपनी भूख मिटाने के लिए मांसभोजी निषादों के द्वीप में गये और उन का भक्षण किया पर फिर भी तृप्त नहीं हुए ।

यहां से उड़ते हुए वे पिता महर्षि कश्यप के पास पहंचे । उन का दर्शन और चरण-स्पर्श किया । पिता द्वारा कुशल-समाचार पूछने पर गरुड़ ने माता और भाइयों की कुशल बताते हुए कहा कि और तो सब ठीक है पर मुझे भरपेट भोजन नहीं मिल पाता है । मैं माता को दास्यभाव से मुक्त कराने के लिए अमृत लाने जा रहा हूं । मैंने माता से भी भोजन के विषय में पूछा था पर उनके बताए भोजन से भी मेरी तृप्ति नहीं हुई । इसलिए आप ही बताइए कि मैं क्या खाऊँ ? जिस से मेरी भूख शान्त हो ?

महर्षि कश्यप ने एक सरोवर को बताते हुए कहा–"वहां एक विशालकाय कछुआ रहता है । एक हाथी उस कछुए को सूंड से पकड़ने का यत्न करता हुआ उस में खड़ा रहता है । तुम उन दोनों को खा कर अपनी भूख शान्त करो और अमृत प्राप्त करो । अमृत लाने के लिए तुम्हें देवताओं से युद्ध करना पड़ेगा । मैं आशीर्वाद देता हूं कि उस में तुम्हारी विजय होगी ।"

पिता की आज्ञा से गरुड़ ने उस सरोवर में जा कर एक पंजे में हाथी को और दूसरे में कछुए को पकड़ा और उड़ चला ।

गरुड़ उड़ता हुआ अलम्बतीर्थ में, मेरुगिरि पर पहुंचा । वह किसी वृक्ष की शाखा पर बैठ कर हाथी और कछुए का भोजन करना चाहता था पर वृक्ष उसके पक्षों की वायु से कांप-कांप उठते थे ।

वहीं एक विशाल वट वृक्ष था । उस ने पक्षिराज गरुड़ को बैठने योग्य कोई वृक्ष खोजते देखकर कहा–"पक्षिराज ! यह जो मेरी सब से बड़ी शाखा है आप इस पर बैठिए। यह आप के भार को सहन कर सकती है ।"

उस वट वृक्ष के कहने पर विशाल आकार वाले पक्षिराज गरुड़ उस महान् वृक्ष को कंपाते हुए उस शाखा पर जा बैठे । पर वह शाखा उन के बैठने से लगने वाले झटके को सह न सकी और टूट गई ।

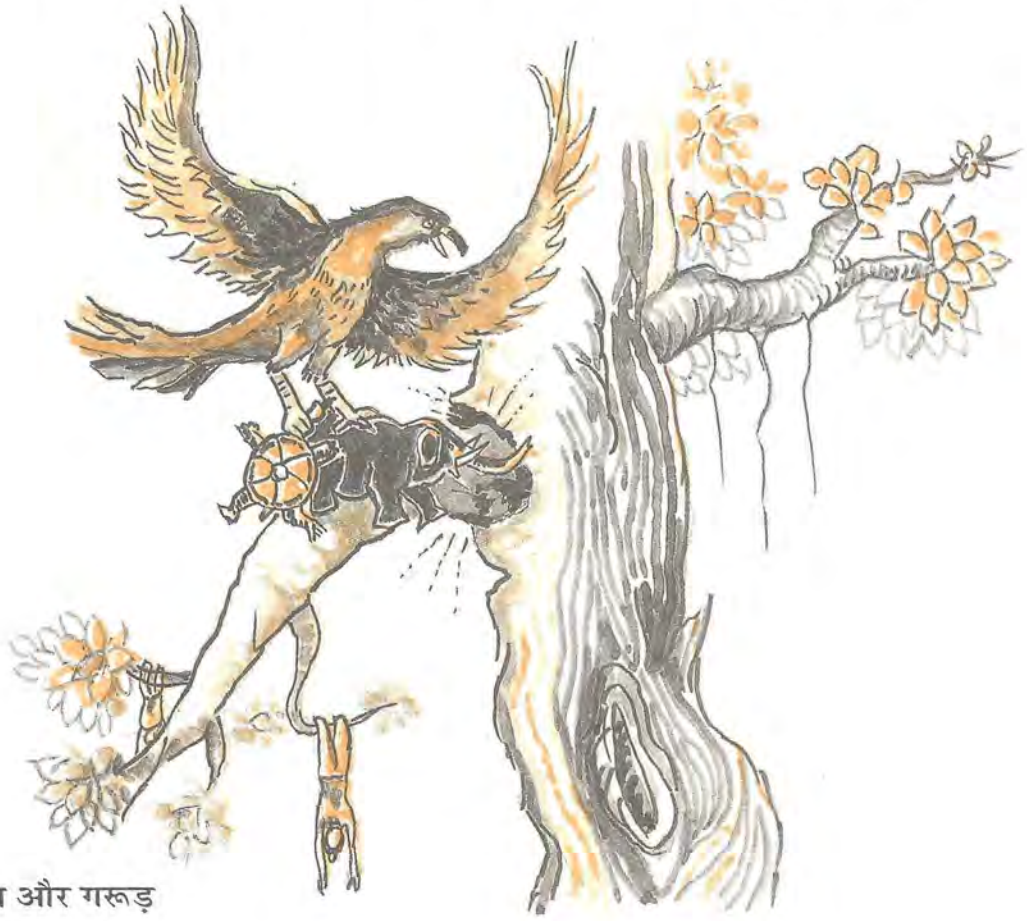

शाखा चरमरा कर गिरती, इस से पूर्व ही गरुड़ ने देखा कि उस शाखा के साथ मुंह नीचे की ओर किए बालखिल्य ऋषि लटक रहे थे।

गरुड़ को चिन्ता हुई कि शाखा के टूटने से कहीं ऋषि का वध न हो जाए। उस ने तत्काल झपटकर वह शाखा चोंच से पकड़ ली।

दोनों पंजों में हाथी और कछुआ और चोंच में वट वृक्ष की शाखा, लिये गरुड़ देर तक उड़ते रहे। अन्त में उड़ते-उड़ते वे गन्धमादन पर्वत पर जा पहुंचे। वहां उन्होंने पूज्य पिता कश्यप को तपस्या में लीन देखा। कश्यप जी की दृष्टि भी अतुल तेजस्वी पुत्र गरुड़ पर पड़ी। उन्होंने शाखा से उल्टे लटके बालखिल्य मुनियों को भी देखा। फिर वे गरुड़ को समझाते हुए बोले—"बेटा, कोई दुःसाहस का काम मत कर बैठना। दुःसाहस विपत्ति का कारण बन जाता है। सूर्य की किरणों का पान करने वाले बालखिल्य कुपित हो कर तुम्हें शापाग्नि से भस्म न कर डालें।

फिर वे बालखिल्य मुनियों से बोले–"तपोधन महात्माओ ! गरुड़ का यह कार्य प्रजा के हित के लिए हो रहा है । इस महान् कार्य के लिए आप इन्हें आज्ञा दें ।"

महर्षि कश्यप के इन विनीत वचनों को सुनकर बालखिल्य उस शाखा को छोड़कर तपस्या करने हिमालय में चले गए ।

उन के चले जाने पर विनता पुत्र गरुड़ ने पिता कश्यप से अस्पष्ट वाणी में पूछा (क्योंकि मुंह में शाखा होने के कारण वे स्पष्ट नहीं बोल पा रहे थे)–"भगवन्! मैं इन शाखाओं को कहां रखूं । कोई ऐसा स्थान बताइए जहां दूर-दूर तक मनुष्य न हों ।

कश्यप जी ने गरुड़ को हिमाच्छादित एक पर्वत बता दिया ।

गरुड़ उस पर्वत की ओर उड़ चले और उस जगह पहुंच कर उन्होंने चोंच खोल कर वह शाखा गिरा दी । शाखा के गिरने से बड़े जोर का शब्द हुआ । पर्वत पर के अनेक वृक्ष टूट कर गिर पड़े ।

तदनन्तर गरुड़ ने उसी पर्वत की एक चोटी पर बैठकर उस हाथी और कछुए का भोजन किया ।

यहां से वे सीधे देवधाम की ओर उड़ चले ।

उधर देवधाम में अनेक अपशकुन होने लगे। देवराज इन्द्र के हाथ में उन का वज्र भय से जल उठा। उल्काएं गिरने लगीं। आंधी उठने लगी। बिना बादलों के बिजली कौंधने और रक्त की वर्षा होने लगी। देवताओं ने अम्लान कमलों की जो मालाएं पहन रखीं थीं, वे मुरझाने लगीं।

भयभीत देवराज इन्द्र आचार्य बृहस्पति के पास जा कर बोले–"गुरुदेव ! ये भयंकर उत्पात क्यों हो रहे हैं ? मुझे ऐसा कोई शत्रु दिखाई नहीं देता जो हमारे साथ युद्ध कर सके।"

देवाचार्य बृहस्पति बोले–"देवराज इन्द्र ! तुम्हारे प्रमाद और अपराध के कारण तथा बालखिल्य महर्षियों के तप के प्रभाव से विनतानन्दन कश्यप मुनि के पुत्र गरुड़ अमृत का अपहरण करने के लिए यहां आ रहे हैं। वे बलशाली, स्वेच्छानुसार रूप धारण करने वाले और अपने मनोरथ को पूरा करने में समर्थ हैं। वे असंभव कार्य को भी संभव कर सकते हैं। मैं समझता हूं कि वे अमृत को अवश्य हर ले जायेंगे।

आचार्य बृहस्पति की बात सुन कर देवराज इन्द्र ने अमृत की रक्षा करने वाले देवताओं को सावधान करते हुए कहा–"अमृत के रक्षको! पक्षिराज गरुड़ अमृत का अपहरण करने आ रहे हैं। आचार्य जी का कहना है वे बड़े पराक्रमी हैं।"

अमृत के रक्षक देवता देवराज इन्द्र की बात सुनकर आश्चर्य में पड़ कर अमृत के चारों ओर घेरा डाल कर खड़े हो गए। महाप्रतापी इन्द्र भी हाथ में वज्र लेकर वहां अमृत की सुरक्षा के लिए डट गए।

शीघ्र ही होने वाले युद्ध की संभावना से देवताओं ने कवच पहन लिये और अस्त्र-शस्त्र धारण कर लिये। देवताओं ने प्रण किया कि हम पूर्ण रूप से अमृत की रक्षा करेंगे।

देवता अभी युद्ध को तैयार हुए ही थे कि गरुड़ आ पहुंचा।

फिर क्या था। देवता तो उन के उग्ररूप को देखकर ही कांपने लग गए। भय से उन्हें कंपकंपी होने लगी। उन के शस्त्र आपस में ही टकराने लगे।

रक्षकों के प्रमुख विश्वकर्मा साहस करके घड़ी भर गरुड़ से लड़े पर इतने में ही अधमरे हो कर गिर पड़े।

गरुड़ ने अपने पक्षों की वायु से धूल उड़ाकर देवलोक में घना अन्धकार कर दिया। देवताओं को धूल के कारण कुछ भी दिखाई नहीं देता था। पर गरुड़ तो सब कुछ देख रहा था। उस ने अपने पंजों, चोंच और पंखों की मार से देवताओं के अंग-अंग विदीर्ण कर डाले।

देवेन्द्र ने इस स्थिति का सामना करने के लिए वायुदेव को बुला कर आज्ञा दी कि इस धूल को तुरन्त परे हटाओ।

वायुदेव ने धूल उड़ा दी। देवताओं को सब कुछ दिखाई देने लगा अब तो देवता भी अपने अस्त्र-शस्त्र सम्भाल कर गरुड़ पर टूट पड़े। पर गरुड़ इस से तनिक भी विचलित नहीं हुए। फिर पक्षिराज ने क्रोध के साथ अपने पंखों को फटकारा और छाती से धक्का मारकर सारे देवताओं को धूल चटा दी।

अब तो देवताओं में भगदड़ मच गई। गरुड़ की तीखी चोंच और पैने पंजों से घायल देवताओं के शरीर से रक्त की धार बहने लगी।

देवता प्राण बचा कर भागते जाते थे और थोड़ी दूर भाग लेने पर पीछे देख लेते थे कि गरुड़ पीछे तो नहीं आ रहा है ।

देवता भाग रहे थे और यक्ष गरुड़ से युद्ध करने को बढ़ रहे थे । गरुड़ ने इन नौ यक्षों को भी यमपुर पहुंचा दिया ।

सब को मार-काटकर गरुड़ अमृतकुम्भ की ओर बढ़े तो देखा कि उस के चारों ओर अग्नि की लपटें उठ रही हैं ।

अब गरुड़ ने आठ हजार एक सौ मुख प्रकट करके नदियों का पानी पी लिया और तुरन्त लौट कर वह पानी आग की उन लपटों पर उंडेल दिया । आग बुझ गई । तब पक्षिराज ने अपना रूप छोटा कर लिया और अमृतकुम्भ को लेने झपटे । पर अमृतकुम्भ के चारों ओर एक लौहचक्र बड़ी तेजी से घूम रहा था । उस के चारों ओर तीखी

धार वाले छुरे लगे हुए थे । यह चक्रयन्त्र देवताओं ने अमृतकुंभ की रक्षा के लिए ही बनाया था ।

गरुड़ कुछ देर तक ध्यानपूर्वक इस चक्र को देखते रहे कि इस में कैसे प्रवेश किया जाए । फिर वे अपने शरीर को संकुचित करके बड़े वेग से चक्र के अरों के बीच के स्थान से पार निकल गए ।

पर अभी भी अमृत सुलभ नहीं था । उस की रक्षा के लिए दो भयंकर विषधर नियुक्त थे । ऐसे विषैले थे कि उन के देखने मात्र से विष का संचार हो जाता था ।

गरुड़ ने उन की आंखों में धूल झौंक कर उन्हें अन्धा बना दिया और पंजों और चोंच से उन्हें नोचने लगे फिर उन दोनों सर्पों को बीच में से काटकर दो टुकड़े कर डाले ।

अब यह अमृतकुम्भ को उठाने के लिए झपटे । लौहचक्र को तोड़कर यह अमृतकुम्भ को उठा कर ले चले ।

गरुड़ ने स्वयम् अमृत नहीं पिया । वह तो अमृत दे कर माता को दास्यभाव से मुक्त कराने के इच्छुक थे ।

आकाश-मार्ग में उन की भेंट भगवान् विष्णु से हो गई। भगवान् विष्णु गरुड़ के इस स्वार्थ रहित पराक्रम से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने गरुड़ से कहा–"मैं तुम्हें वर देना चाहता हूं।"

गरुड़ ने कहा–"प्रभो ! मैं आपके भी ऊपर (ध्वजा में) स्थित होऊं और अमृत पिये बिना ही अमर हो जाऊं, यह वर दीजिए।"

भगवान् विष्णु ने 'एवमस्तु' कह कर गरुड़ की मनोकामना पूरी की।

फिर गरुड़ ने भगवान् विष्णु से कहा–"प्रभो ! मैं भी आप को वर देना चाहता हूं। आप भी कोई वर मागें।"

विष्णु भगवान् ने गरुड़ से अपना वाहन (सवारी) होने का वर मांगा और गरुड़ ने स्वीकार कर लिया।

देवराज इन्द्र ने देखा कि सारे प्रयत्नों के होते भी गरुड़ अमृत का अपहरण करने में सफल हो गया। इस में उन्हें समस्त देवताओं का अपमान लगा। तब देवराज ने क्रोध में गरुड़ पर वज्र से प्रहार किया।

वज्र-प्रहार की तनिक भी परवाह न करते हुए गरुड़ ने कहा–"देवराज ! जिन महर्षि की हड्डियों से यह वज्र बना है, उन का सम्मान और आपका सम्मान करने के लिए मैं अपना एक पंख जिस का आप कहीं ओर-छोर नहीं पा सकेंगे, त्याग देता हूं। यह कहकर गरुड़ ने अपने डैने में से एक पंख गिरा दिया। उस सुन्दर पंख के कारण गरुड़ का नाम 'सुपर्ण' पड़ा।

देवराज इन्द्र पक्षिराज पर वज्र का कोई प्रभाव न होते देखकर आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने गरुड़ से प्रस्ताव किया–"मैं तुम्हारे साथ दृढ़ मैत्री करना चाहता हूं।

गरुड़ ने मैत्री का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया ।

दोनों एक दूसरे के बल-पराक्रम से परिचित हो चुके तो देवराज ने कहा–"मित्र, यदि तुम्हें इस अमृत की आवश्यकता नहीं है तो इसे लौटा दो । जिन्हें तुम यह अमृत देना चाहते हो, वे इसे पी कर अमर हो कर हमें बहुत कष्ट देंगे ।"

गरुड़ ने कहा–"मित्र ! मैं एक विशेष प्रयोजन से इसे ले जा रहा हूं । मैं इसे किसी को पीने के लिए नहीं दूंगा । मैं जहां इसे रखूंगा, तुम इसे वहां से उठा कर ले आना ।

यह सुन कर इन्द्र प्रसन्न हुए। उन्होंने गरुड़ से वर मांगने को कहा।

गरुड़ को किसी वर की आवश्यकता नहीं थी पर मित्र का मान रखने के लिए उन्होंने यह वर मांगा कि सर्प मेरा भोजन हो जायें। इन्द्र ने तथास्तु कह कर वरदान दे दिया।

गरुड़ अमृत ले कर माता विनता के पास पहुंचे और अमृत ले आने का समाचार सुनाया । फिर वे सर्पों से बोले–"मैं तुम्हारे लिए वचनानुसार अमृत ले आया हूं । इसे कुशाओं के ऊपर रख रहा हूं । तुम सब स्नान और स्वस्तिवाचन से पवित्र हो कर इस का पान करो । अब अपने वचन के अनुसार मेरी माता को दासी के कार्य से मुक्त करो ।

सर्पों ने पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार सारी बातें मान लीं।

सर्प तो स्नान के लिए चले गए और इन्द्र अमृत को ले कर फिर स्वर्ग में जा पहुंचे ।

सर्प लौट कर आये तो अमृत वहां नहीं था । सर्पों ने यह सोचकर सन्तोष कर लिया कि हम ने भी कपट किया था इसलिए किसी ने हमारे साथ कपट किया ।

फिर उन्होंने सोचा कि यहां कुशा पर अमृत रखा था, संभव है, कुशा में उस का कुछ अंश हो । यह सोच वे कुशा को चाटने लगे, जिस से उन की जिह्वा बीच में से गिर गई ।

पक्षिराज गरुड़ माता विनता को स्वतन्त्र कराकर आनन्द से रहने लगे ।

योग्य सन्तान अपनी जननी और जन्मभूमि को कभी परतन्त्र नहीं रहने देती ।

◆◆◆

नाग और गरूड़

(महाभारत के आदिपर्व पर आधारित गरूड़ माता विनता के स्वतन्त्र करवाने की आदर्श कहानी)

महाभारत इतिहास तो है ही, धर्म, नीति, ज्ञान और लोक-व्यवहार का ग्रन्थ भी है। महाभारत में ज्ञान, धर्म, नीति और लोक-व्यवहार की अनेक ऐसी कथाएँ मिलती हैं, जो आज के जीवन के लिए भी बड़ी उपयुक्त हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसी ही एक रोचक और आदर्श कथा का संकलन किया गया है। बालकों, किशोरों, प्रौढ़ों, युवकों—सभी आयु के पाठकों के लिए बड़ी उपयोगी है।

यह कथा अच्छाई और बुराई का पूरा-पूरा बोध कराती है। लोभ, द्वेष किस प्रकार हानिकारक है और साहस, पुरुषार्थ किस प्रकार लाभप्रद है, यही बताती है।

संस्कार प्रकाशन